दलितों व शोषितों का पाक्षिक पत्र
विज्ञापन के लिए केन्द्रीय सरकार व राज्यों द्वारा स्वीकृत

हिमायती

सम्पादक–डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर

□ *वर्ष 64* □ *अंक : 3-5* □ *दिल्ली* □ *दिसम्बर, 2025 (प्रथम)* □ *मूल्य : 2 रु.*

41वां राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन का भव्य आयोजन

12-13 दिसम्बर को दिल्ली में सम्मानित होंगे साहित्यकार, समाजसेवी और कलाकार

भारतीय दलित साहित्य अकादमी का द्विदिवसीय 41वां राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन 12–13 दिसम्बर, 2025 को पंचशील आश्रम, झड़ौदा (बुराड़ी बाई पास), आउटर रिंग रोड, दिल्ली में आयोजित किया जा रहा है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर के इस महासम्मेलन में देश के अलावा विदेशों के दलितोत्थान में जुड़े दलित साहित्यकार, पत्रकार, लेखक, समाजसेवी भाग लेंगे और दलितोत्थान विषयों पर विचार विमर्श करेंगे।

पहले दिन का सम्मेलन **'सम्मान दिवस'** व दूसरे दिन का सम्मेलन **'अधिकार दिवस'** के रूप में आयोजित होगा। इस अवसर पर दलितोत्थान के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों के लिए दलित साहित्यकारों और समाजसेवियों को डा. अम्बेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार तथा डा. अम्बेडकर राष्ट्रीय फेलोशिप से सम्मानित किया जायेगा।

इस अवसर पर विभिन्न प्रदेशों के दलित कलाकार अपना सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगे। इस दलित साहित्यकार सम्मेलन में विभिन्न दलों के राजनेता भाग लेकर दलितों की दशा व दिशा पर अपने विचार व्यक्त करेंगे। सम्मेलन के शुभावसर पर विभिन्न अवार्डों से सम्मानित किये जाने वाले महानुभाव हैं :

डा. अम्बेडकर इंटरनेशनल अवार्ड-2025

श्री भद्रा प्रसाद नेपाल
जर्नलिस्ट / लॉयर / लेक्चरार
फाऊंडिंग चेयरपर्सन –
यूनाटेड नेपाल लीगल सर्विसेस
दिलीबाजार, काठमांडू (नेपाल)

डा. अम्बेडकर नेशनल अवार्ड-2025

दलित साहित्य की अभिवृद्धि के लिए

1. **डा. एन. सिंह**
   वरिष्ठ दलित साहित्यकार
   सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)

दलित कला व संस्कृति की अभिवृद्धि के लिए

2. **श्री राजूदास**
   दलित लेखक / दलित आर्टिस्ट / ड्रामाटिस्ट
   दलित एक्टर, कोलकाता
   (प. बंगाल)

दलित साहित्य / दलित पत्रकारिता अभिवृद्धि के लिए

3. **श्री आर.के. गुनचन्द्रा**
   प्रदेशाध्यक्ष
   भारतीय दलित साहित्य अकादमी
   मणिपुर

दलितों के अधिकारों के संघर्ष के लिए

4. **श्री निरंजन बीसी**
   सांसद (राज्यसभा)

दलित महिलाओं के सशक्तिकरण व स्वाभिमान की अभिवृद्धि के लिए

5. **श्रीमती हेमलता कन्सोटिया**
   अध्यक्ष / संस्थापक लेड्स,
   जयपुर
   (राजस्थान)

दलित समाज में जनचेतना जाग्रत करने हेतु

6. **श्री बी.आर. कुन्डल**
   पूर्व चीफ सेक्रेट्री,
   पूर्व मंत्री,
   जम्मू–कश्मीर सरकार

दलित धर्म प्रचार की अभिवृद्धि के लिए

7. **श्री पंढरी नाथ पंवार**
   जनरल सेक्रेट्री
   राष्ट्रीय चर्मकार महासंघ
   मुम्बई (महाराष्ट्र)

दलित धर्म प्रचार की अभिवृद्धि के लिए

8. **श्री लालचन्द रविदासिया**
   अध्यक्ष – रविदासिया धर्म प्रचार
   मंडल, मलोट (पंजाब)

दलितोत्थान सेवा के लिए

9. **डा. विजयेश कुमार**
   पीएच.डी. (सोशल वर्कर)
   डायरेक्टर–प्रसार होस्पिटल
   मुजफ्फरपुर (बिहार)
10. **श्री प्रेमराज नियाल @ निहाल सिंह**
    प्रदेशाध्यक्ष–भारतीय दलित साहित्य अकादमी, उड़ीसा
    संरक्षक–इंडियन रेडक्रास सोसाइटी, सम्बलपुर (उड़ीसा)

डा. अम्बेडकर डिस्टींगुइस्ट सर्विस नेशनल अवार्ड-2025

1. **श्री देश कुमार कल्याण**
   सोशिल वर्कर
   शिव विहार कालोनी,
   विकास नगर, देहरादून
   (उत्तराखंड)
2. **श्री महेश चन्द्र आर्य**
   सांइटिस्ट
   पूर्व एसोसियेट डायरेक्टर
   डी.आर. डिओ, सुरक्षा मंत्रालय,
   भारत सरकार

(शेष पृष्ठ 2 पर)

सम्पादकीय

41वें राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन में आपका अभिनन्दन है

भगवान बुद्ध ने कहा था—'अत्तो दीपो भवः' (अपने दीपक स्वयं बनो)। मनुस्मृति की वर्ण–व्यवस्था और जात–पांत, भेदभाव के खिलाफ प्रचार के लिए उन्होंने कहा था—'चरवैति चरवैति भिक्खुवे, बहुजन हिताय–बहुजन सुखाय।'

बुद्ध की इसी परम्परा को संत शिरोमणि गुरु रविदास जी ने यह कहकर आगे बढ़ाया—'पराधीन का दीन क्या, पराधीन बेदिन। रविदास दास पराधीन का करे ना कोई यकीन।' सामाजिक विषमता को मिटाने के लिए उन्होंने कहा था—'ऐसा चाहूं राज मैं, जहाँ मिले सबन को अन्न। छोट बड़े सब सम बसैं, रविदास रहे प्रसन्न।।' उन्होंने आध्यात्मिक शुद्धता पर जोर देते हुए कहा—'जिसका मन चंगा, उसकी खटोटी में गंगा।'

सद्गुरु कबीर ने भी इसी आध्यात्मिक शुद्धता पर बल देते हुए कहा—'कबीरा मन पावन भया, जैसे गंगा नीर। पीछे पीछे हरि पिफरें, कहत कबीर कबीर।।' उन्होंने ब्राह्मणवाद पर चोट करते हुए कहा—'तू कहता कागज की लेखी, मैं कहता अखियन की देखी। तेरा मेरा मनुवा, कैसे एक होय रे।।'

स्वामी अछूतानन्द 'हरिहर' और बाबू मंगूराम ने मानवतावादी 'आद धर्म' की इस परम्परा को आगे बढ़ाया। राय साहेब मुन्शी हरी प्रसाद टम्टा ने तो इंग्लैंड की राउन्ड टेबुल कान्फ्रेंस में यह तार भेजकर की 'डा. अम्बेडकर' ही अछूतों (दलितों) के एकमात्र नेता हैं, महात्मा गांधी नहीं।' मनुवादियों पर एक तरह से व्रजपात कर दिया था। इससे मनुवादी हिन्दू धर्म के सामने मानवतावादी 'आद धर्म' और सशक्त हुआ। उन्होंने उत्तराखण्ड के शिल्पकारों को 'आद धर्म' से जोड़ करके उनके अन्दर स्वाभिमान जगाया।

भारतरत्न बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने अपने इन्हीं संत–महात्माओं के मानवतावादी 'आद धर्म' की परम्परा को आगे बढ़ाते हुए भारत के संविधान में स्वतंत्रता, समता, बन्धुता के अधिकारों को सम्मिलित करते हुए जात–पांत, वर्ण–व्यवस्था के खिलाफ न्याय, शिक्षा, चिकित्सा, सुरक्षा, सम्मान के अधिकारों को प्रत्येक नागरिक

(शेष पृष्ठ 3 पर)

भीम–वंदना

(तर्ज : वन्दे मातरम्)

वन्दे अम्बेडकरम्! वन्दे अम्बेडकरम्!
अज्ञानान्धकार कर पूषित,
संगठन शिक्षा से कर भूषित,
संघर्षाह्वान नितकरम्!
वन्दे अम्बेडकरम्! वन्दे अम्बेडकरम्!
भारत दलित जनों के त्राता,
सभी विधि–विधान के ज्ञाता,
युग–युग के बन्धन मुक्ति–करम्!
भारत भाल–तिलक तुम गुरुवरम्।
वन्दे अम्बेडकरम्! वन्दे अम्बेडकरम्!
– आचार्य गुरु प्रसाद

Bheem-Vandana

(Tune : Vande Matram)

Vande Ambedkaram! Vande Abmedkaram!
Agayanandhakar Kar Pooshit
Sangathan Shiksha Se Kar Bhooshit,
Sangharshahvan Nit Karam
Vande Ambedkaram! Vande Abmedkaram!
Bharat Ke Dalit Janon Ke Trata
Sabhi Vidhi Vidhan Ke Gyata
Yug Yug Bandhan Mukti Karam
Bharat Bhal Tilak Tum Guruvaram
Vande Ambedkaram! Vande Abmedkaram!

-Acharya Guru Prasad

बुद्ध वंदना (पंचशील)

पाणातिपाता वेरमणी, सिक्खापदं समादियामि।
अदिन्नादाना वेरमणी, सिक्खापदं समादियामि।
कामेसुमिच्छा चारा वेरमणी, सिक्खापदं समादियामि।
मुसावादा वेरमणी, सिक्खापदं समादियामि।
सुरा–मेरय मज्जपमा दट्ठाणा वेरमणी, सिक्खापदं समादियामि।
(• मैं बिना किसी कारण के किसी प्राणी की हत्या नहीं करूंगा, ऐसी शिक्षा ग्रहण करता हूं। • मैं चोरी नहीं करूंगा, ऐसी शिक्षा ग्रहण करता हूं। • मैं व्यभिचार नहीं करूंगा, ऐसी शिक्षा ग्रहण करता हूं। • मैं झूठ नहीं बोलूंगा, ऐसी शिक्षा ग्रहण करता हूं। • मैं शराब आदि नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करूंगा, ऐसी शिक्षा ग्रहण करता हूं।)

<u>त्रि–शरणगमन</u>

बुद्धं सरणं गच्छामि। धम्मं सरणं गच्छामि।
संघं सरणं गच्छामि।
(मैं बुद्ध की शरण में जाता हूं। मैं धम्म की शरण में जाता हूं। मैं संघ की शरण में जाता हूं।)
दुतियम्पि, बुद्धं सरणं गच्छामि।
दुतियम्पि, धम्मं सरणं गच्छामि।
दुतियम्पि, संघं सरणं गच्छामि।
(• दूसरी बार भी, मैं बुद्ध की शरण में जाता हूं। • दूसरी बार भी, मैं धम्म की शरण में जाता हूं। • दूसरी बार भी, मैं संघ की शरण में जाता हूं।)
ततियम्पि, बुद्धं सरणं गच्छामि।
ततियम्पि, धम्मं सरणं गच्छामि।
ततियम्पि, संघं सरणं गच्छामि।
(• तीसरी बार भी, मैं बुद्ध की शरण में जाता हूं। • तीसरी बार भी, मैं धम्म की शरण में जाता हूं। • तीसरी बार भी, मैं संघ की शरण में जाता हूं।)

<u>वन्दना</u>

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मा सम्बुद्धस्स।
नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मा सम्बुद्धस्स।
नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मा सम्बुद्धस्स।
मैं उन सभी को नमस्कार करता हूं जो अरहत (राग, द्वेष, मोह, लोभ से मुक्त) और सम्यक सम्बुद्ध (सम्पूर्ण जागृत) हो गये हैं।

पृष्ठ 1 का शेष....12-13 दिसम्बर को दिल्ली में सम्मानित होंगे साहित्यकार, समाजसेवी और कलाकार

3. **श्री शिव शंकर, एम., हेडमास्टर**
गवर्मेंट हायर सेकेन्डरी स्कूल,
मोरन हल्ली, कृष्णागिरी
(तमिलनाडु)
4. **मास्टर भोभाराम बोस**
एदोबा उदी, जिला बलोतरा
(राजस्थान)
5. **डा. एहीबाम ऋणिकेश सिंह**
मणिपुर यूनीवर्सिटी आफ कल्चर
इम्फाल वेस्ट डिस्ट्रिक्ट (मणिपुर)
6. **श्रीमती मीना बछूवन,** *अध्यक्ष*
कोटद्वार महानगर कांग्रेस
कोटद्वार, गढ़वाल (उत्तराखंड)
7. **डा. संतोष. सी,**
एच.ओ.डी. एंड असिस्टेंट प्रोफेसर
इक्नोमिक्स डिपार्टमेंट
जी.एफ. जी.सी. टिलावली,
हवेरी (कर्नाटक)
8. **श्री सुखपाल सिंह,** पार्षद
कोटद्वार गढवाल (उत्तराखंड)
9. **डा. रमेश कुमार**
सोशिल वर्कर
सहयोग अपार्टमेंट, पश्चिम विहार
दिल्ली
10. **डा. के. कविमनी,**
असिस्टेंट प्रोफेसर
बस्कर इल्लम, वल्लम, थंजावूर
(तमिलनाडु)
11. **श्री कुशला लाल लोहानी**
छावनी बाजार, जोशीमठ
(उत्तराखंड)
4. **डा. रविकांत**
प्रोफेसर एंड हेड
डिपार्टमेंट आफ मेडिसन, ऐम्ज,
ऋषिकेश (उत्तराखंड)
5. **श्री जोसी पी.ए.**
आर्टिस्ट, कल्चर एक्टीविस्ट,
चेविट्टूनडकम, कोच्चि, ईर्नाकुलम
(केरल)
6. **डा. खवई रकपम हेरोजीत सिंह**
डायरेक्टर, कवूई सलांग मेबा हेल्थ
केयर प्रा.लि., इम्फाल (मणिपुर)
7. **श्री रूद्रेश बी.एस.**
सोशिल वर्कर
कनकपुरा, बंगलौर साऊथ
(कर्नाटक)
8. **श्री कुशल कुमार बायान**
सोशिल वर्कर
दरंग मेला, तमुलपुर, बी.टी.आर.
(आसाम)
9. **श्री शंकर**
प्रेजीडेंट–डी.एस.एस. मैसूर
डिस्ट्रिक्ट हलागैह हुंडी, मैसूर
(कर्नाटक)
10. **श्री चन्नाप्पा**
स्टेट प्रेजीडेंट,
जोनल सेक्रेट्री सदर्न रेलवे,
बंगलौर (कर्नाटक)
11. **श्री नन्जून्डैह.आर. पुत्र श्री रंगैह**
चन्द्रोदय महल, कोलेगला टाऊन
चमराज नगरा–डिस्ट्रिक्ट
(कर्नाटक)
2. **श्री सुजीत शोम**
सोशिल वर्कर
लंका टाऊन, होजै (आसाम)
3. **श्रीमती वी. रेनुका**
फाउन्डर प्रेजीडेंट–डी.एस.एस. वुमेल
सेल, डा. अम्बेडकर यूथ
ओर्गेनाईजेशन, बंगलौर (कर्नाटक)
4. **श्री दिलवर हुसैन बरभूईया**
प्रेजीडेंट–मायनोरिटी डब्लपमेंट
कौंसिल आफ आसाम, जिला परिषद
मेम्बर–हेलाकांडी (आसाम)
5. **श्री मनोज उत्तमराव गारडे**
चीफ एडिटर–खान्देश मेदान
न्यूजपेपर, धुले (महाराष्ट्र)
6. **श्री सुजीत कुमार देब**
सोशिल वर्कर
सेक्रेट्री–ए.जी.पी. सेंट्रल कमेटी,
आसाम
चेयरमेन–गिरीराज गुरुकुल, सिल्चर,
कच्छार, सिल्चर (आसाम)
7. **डा. अमीत कुमार कलवार**
मेम्बर, रोटरी क्लब आफ ग्रिलैंड,
सिल्चर
प्रेजीडेंट–कलवार समाज वारक
वेलीचेप्टर, मेहेरपुर सिल्चर (आसाम)
8. **श्री एम. जोहन इन्बाराज**
सोशिल वर्कर
गांधी नगर, कुड्डालोर (तमिलनाडु)
9. **श्री एस. नन्जुन्डाईहा**
सोशिल वर्कर
विश्वरत्न बोधिसत्व निलय
19. **डा. बेदव्रत पाठक**
सर्वोदय नगर, चांदमारी
गुवाहाटी (आसाम)
20. **श्रीमती काव्यश्री जी.एस.**
एडवोकेट
कर्नाटक हाई कोर्ट, बंगलुरू
(कर्नाटक)

डा. अम्बेडकर साहित्यश्री नेशनल अवार्ड-2025

1. **डा. पन्चनन हल्दर**
एसोसिएट प्रोफेसर
बंगबासी इवनिंग कालेज,
कोलकाता (प. बंगाल)
2. **श्री करेन्द्रा चन्द्रा तालुककार**
रिटायर्ड प्रिंसिपल–दमदमा
कालेज
टेटेलिया, गोटानगर, कामरूप
(मेट्रो), गुवाहाटी (आसाम)
3. **श्रीमती वर्षा ऊके नागपाल**
लेखिका
सैनिक फार्मस्, नई दिल्ली
4. **डा. जायसीमोल अगस्टीन**
लेखक
प्रोफेसर एंड एच.ओ.डी.
डिपार्टमेंट आफ मलयालम,
एज्जूप्पशन कालेज, चंगनास्मरी,
कोट्टायम (केरल)
5. **डा. रोहिदास धोन्डिबा जाधव**
भीम नगर इटरोली, भोर,
पुणे (महाराष्ट्र)
6. **श्री दिनेश भाई चनाभाई वाघेला**
आर्टिस्ट एंड सिंगर
चैतन्य, सदर, राजकोट (गुजरात)

भगवान बुद्ध नेशनल अवार्ड-2025

1. **डा. हरी प्रसाद आर्य**
मार्शल काटेज कम्पाउन्ड
मल्लीताल, नैनीताल (उत्तराखंड)
2. **श्री नागराजू. जी.**
विजयनगरा, रामनगरा,
बंगलौर साउथ डिस्ट्रिक्ट
(कर्नाटक)

लोह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल नेशनल अवार्ड-2025

1. **डा. स्मिता भौमिक**
एम.बी.बी.एस.
प्राइम मेडिकल सेन्टर, हेजाई
(आसाम)
2. **श्री नटराज भीमाप्पा होसुरू**
प्रेजीडेंट–बडनाजोडु, ग्राम पंचायत,
डसनाकूपा, सिरसी, उत्तर कन्नड़
(कर्नाटक)

शान्तिदूत पं. जवाहरलाल नेहरू नेशनल अवार्ड-2025

1. **डा. आर.सी.पी. सिसोदिया**
एम.बी.बी.एस.,एम.आर.एस (लंदन)
एक्स–सी.एम., एच.ओ.आर.डी.
गार्डी मेडिकल कालेज, उज्जैन
(म.प्र.)

12. **डा. पंगमबाम बचापान**
फैशन डिजाइनर
येनपोक पेरोखोगजीन,
इम्फाल ईस्ट (मणिपुर)

13. **श्री इलंगबाम प्रेमनन्दा सिंह**
मेकअप एंड फैशन डिजाइनर
नेहरूप माई लेकाई, इम्फाल ईस्ट
(मणिपुर)

14. **डा. गुरुमयूम मेम्चादेवी**
हेंडीक्राट एक्सपलोरेशन
इम्फाल ईस्ट (मणिपुर)

15. **श्री थोऊडम सन्थोई मैतेई**
आर्ट एंड कल्चर एमैबी
इम्फाल ईस्ट (मणिपुर)

16. **श्रीमती सरस्वती बीजू**
करात परमू, कोनाट्टू
कोझिक्कोडु (केरल)

17. **श्री किरन नारायण शिरूर**
प्रेजीडेंट–कर्नाटक स्टेट एस.सी.
एंड एस.टी. रिजर्वेशन प्रोटेक्शन
फोरम, भटकल (कर्नाटक)

डा. अम्बेडकर एक्सीलेन्सी सर्विस नेशनल अवार्ड-2025

1. **डा. एन. सिंह कंडली**
सोशिल वर्कर
इन्द्रप्रस्थ कालोनी, देहरादून
(उत्तराखंड)

2. **श्री गजेन्द्र सिंह**
सोशिल वर्कर
चूकूवाला, देहरादून
(उत्तराखंड)

3. **श्रीमती ओईनम गीता रानी देवी**
प्रिंसिपल–रिसेंट हायर सेकेन्डरी
स्कूल, सगोल टोंगबा,
इम्फाल वेस्ट (मणिपुर)

12. **श्री धन्मया चेत्री**
राजबन, जोरहाट
(आसाम)

13. **डा. नरेश कुमार**
असिस्टेंट प्रोफेसर
पी.एन.जी. गवर्मेंट पी.जी. कालेज
राम नगर, नैनीताल (उत्तराखंड)

14. **श्री उन्नीकृष्णन एम.बी.**
अन्नानाड, त्रिसूर (केरल)

15. **श्री के.के. रामचन्द्रन**
माय्यील, कन्नूर (केरल)

16. **डा. नरेश कुमार**
असिस्टेंट प्रोफेसर/पीएसई
डा. अम्बेडकर चेयर, अन्नामलाई
यूनीवर्सिटी, कुड्डालोर
(तमिलनाडु)

17. **इंजी. एस. किरूबानन्थम**
रिटायर्ड एक्जीक्युटिव इंजीनियर,
टिएनईबी, वेनरामपेट, चेन्नई
(तमिलनाडु)

18. **श्री महादेवा स्वामी**
मगोडी रोड, बंगलौर (कर्नाटक)

19. **डा. अलका,** *असिस्टेंट प्रोफेसर*
गवर्नमेंट पी.जी. कालेज,
राम नगर, नैनीताल (उत्तराखंड)

20. **डा. गीता रावत शाह**
सत्येन्द्र नगर, कोटद्वार गढ़वाल
(उत्तराखंड)

डा. अम्बेडकर सेवाश्री नेशनल अवार्ड-2025

1. **डा. वी. रथिकरनी**
एसोसिएट प्रोफेसर / सीएम.ई
डा. अम्बेडकर चेयर,
अन्नामलाई यूनिवर्सिटी, मुथैयाह
नगर, कुड्डालोर (तमिलनाडु)

शिवाका हाली, वेलन्डुर
चमराजानगरा (कर्नाटक)

10. **श्री दलाभाई राव**
न्यू रामदेव कालोनी,
जालोर (राजस्थान)

11. **श्री पी. मनी**
रेवरेड पास्टर
रामलिंगा नगर, वेल्लोर
(तमिलनाडु)

12. **श्री सी. सेनथिल कुमार**
सोशिल वर्कर
के. चाऊपुर, कृष्णागीरी
(तमिलनाडु)

13. **श्री अजय मेहरा**
प्रेजीडेंट–राजस्थान नर्सेज
एसोसियेशन, कोटा डिवीजन
महावीर नगर, कोटा (राज.)

14. **श्री के. दमबिगान**
सोशिल वर्कर
यूनियन सलाई, पेरामनूर, चेंगलपुट
(तमिलनाडु)

15. **श्री एस. पंडियान**
सोशिल वर्कर
मेलेरी, चेंगलपुट
(तमिलनाडु)

16. **श्री मोहम्मद अब्दुल करीम**
सोशिल वर्कर
बुन्डासील, बदलपुर, करीम गंज
(आसाम)

17. **श्री के. बालाजी**
सोशिल वर्कर
वरापुर पट्टनम, रानीपेट
(तमिलनाडु)

18. **श्री एम. सक्थीवेल**
इलेक्ट्रिशीयन–साउथ रेलवे,
चेन्नैई (तमिलनाडु)

6. **डा. (श्रीमती) एस. सुसा**
असिस्टेंट प्रोफेसर
केसाग्रांड, कन्नन कालोनी
एलनडुर (तमिलनाडु)

7. **श्री राजू कुन्नाक्कट्टू**
ऐनीक्कड ईस्ट, कोट्टायम
(केरल)

8. **श्री रेजी ईलेन्जीथारा**
श्रीरामा रेजीडेंसी, अमरूथाहल्ली
बंगलौर (कर्नाटक)

9. **श्री ए.एल. जोसे थिरूर**
बारा, अधूमा, कसरगोड,
(केरला)

10. **श्री एम.जी. गोकुलापालन**
राईटर
पोन्नूरून्नी, कोची (केरल)

डा. अम्बेडकर कलाश्री नेशनल अवार्ड-2025

1. **श्री श्यामकुमार**
एक्टर, राईटर, डायरेक्टर
भारतीय डाक विभाग, लखनऊ
(उ.प्र.)

2. **कुमारी भूमिका चौधरी**
लेखिका/कलाकार
खरघुली, कामरूप (मेट्रो)
गुवाहाटी (आसाम)

3. **श्री नीलमनी बैश्य**
अम्बारी, बांगसोर
जिला–कामरूप (आसाम)

4. **मास्टर गौतम गोविन्द**
कुन्डाम्कुझी इलम
पो.–श्रेष्ठा, जिला–कन्नूर (केरल)

5. **श्रीमती इंदिरा सुनील**
शिव पार्वती नृत्यकला क्षेत्रम्
पो. थन्नेर कोडे (केरल)

'प्रोफेसर' - मानद उपाधि सम्मान

1. **श्री जी.आर. बंजारे 'ज्वाला'**
स्टेट प्रेजीडेंट–भारतीय दलित
साहित्य अकादमी, छत्तीसगढ़

2. **श्री पन्नालाल कटारिया 'बिथोडा'**
बिथोडा कलां, मारवाड जंक्शन,
पाली (राजस्थान)

3. **डा. जितेन्द्र 'मनु' एडवोकेट**
सिद्धार्थ नगर, हेनमकोंडा, वारंगल
(तेलंगाना)

4. **श्री बाबूलाल 'निर्मल'**
अटरू, जिला–बारां (राजस्थान)

5. **कर्नल (डा.) करम सिंह**
रिटायर्ड कर्नल–आर्मी मेडिकल
कोर्पस, गवर्नमेंट आफ इंडिया

वीरांगना सावित्रीबाई फुले नेशनल अवार्ड-2025

1. **कुमारी आशा भानुदास पलवे**
एल.एन.टी. शेजारी, सावेदी
अहमद नगर (महाराष्ट्र)

2. **डा. माया रवीन्द्रन**
सोशिल एक्टीविस्ट
पूजापुरा, थिरूअन्नतपुरम (केरल)

महात्मा जोतीबा फुले नेशनल अवार्ड-2025

1. **डा. रोशनी. सी.**
अंजानम, पोंगूमूडी मेडिकल
कालेज, त्रिवेन्ड्रम (केरल)

2. **डा. प्रमोद बबन धीवर, प्रिन्सिपल**
श्री कलावती बाधे आर्ट्स एंड कामर्स
महाविद्यालय, खादी मशील चौक,
कोन्धवा, पुर्ण (महाराष्ट्र)

3. **श्री धनपति शाह, लेक्चरार**
   गवर्नमेंट इन्टर कालेज, देवखाल
   दसौली, चमोली (उत्तराखंड)
4. **श्री गीरीश मार्था नायक**
   स्टेट को–ओरडीनेटर
   कर्नाटक नव निर्माण वेदिके, हुबली
   सिरसी, उत्तर कन्नड़ (कर्नाटक)

राय बहादुर मुंशी हरी प्रसाद टम्टा नेशनल अवार्ड–2025

श्री जंगी रडवाल
प्रभारी प्रधनाचार्य
शहीद सैनिक अजय लाल
राजकीय इंटर कालेज थिरपाक,
चमोली (उत्तराखंड)

श्री राकेश सोनी मेमोरियल गुरू घासीदास नेशनल अवार्ड-2025

डा. हरी सिंह पाल
पूर्व डायरेक्टर
आकाशवाणी, भारत सरकार
जनरल सेक्रेट्री–नागरी लिपि परिषद्,
नई दिल्ली

वीरांगना त्रिलोचन सुमनाक्षर मेमोरियल नेशनल अवार्ड-2025

कुमारी सत्या जाटव
पूर्व–सीनियर नर्सिंग सुपरिन्टेंडेंट,
पंत अस्तपाल, नई दिल्ली

प्रियदर्शी सम्राट अशोक नेशनल अवार्ड-2025

श्री बंजीलाल शाह,
रेंज आफिसर

सम्पादकीय का शेष...41वें राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन में आपका अभिनन्दन है

के लिए अनिवार्य घोषित किया और इन्हें प्राप्त करने के लिए– 'शिक्षित बनो, संगठित हो, संघर्ष करो।' मूलमंत्र दिया।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के लिए अपने इन संत, महात्मा और महापुरुषों के ये वचन मानवतावादी 'आद धर्म' के सार हैं और अकादमी के धार्मिक मापदंड का आधार है।

भगवान बुद्ध के 'बहुजन हिताय व बहुजन सुखाय' तथा 'अत्तो दीपो भव' के उद्‌बोधन को अपना आदर्श व आप्त वाक्य मानकर भारतीय दलित साहित्य अकादमी 1984 से देश में जन चेतना का कार्यक्रम लेकर आगे बढ़ रही है। गत 41 वर्षों में अकादमी का 'नेटवर्क' भारत के सभी राज्यों की सीमा लांघकर विदेशों तक फैल चुका है। दक्षिण भारत के राज्यों की अकादमी के अलावा जो सम्मेलन इसी वर्ष राजस्थान के जसलमेर में हुआ। उसमें सभी राज्यों की अलग– अलग भाषा होते हुए भी उनके सभी प्रतिनिधि निर्बाध गति से पारस्परिक भ्रातृभाव से इतने घुले–मिले नजर आ रहे थे जैसे वे सभी एक ही परिवार के हों। यही स्थिति पूर्वोत्तर भारत के राज्यों की अकादमी की समिति की है। दक्षिण भारत के 7 राज्यों और पूर्वोत्तर भारत के 8 हैं, देश में आज दलित साहित्य की तीव्र मांग है। यह सब भारतीय दलित साहित्य अकादमी के 41 सालों के प्रयास का फल है।

आज बुद्ध के सामने मनु को नकार दिया गया है। संत गुरु रविदास व सद्‌गुरु कबीर के सामने ब्राह्मणवाद नतमस्तक है। महात्मा जोतिबा फुले, स्वामी अछूतानन्द 'हरिहर' के सामने मनुस्मृति की विषमता भरी वर्ण व्यवस्था चूर–चूर हुई नजर आ रही है। भारतरत्न बाबा साहब डा. अम्बेडकर तथा बाबू जगजीवन राम के समता का सन्देश ने सदियों से सोये हुए दलितों को झकझोर कर जगाकर खड़ा कर दिया है। वीरांगना झलकारीबाई और वीरांगना सावित्रीबाई फुले के पराक्रम, साहस व वीरता के सामने उच्च वर्णीय महिलायें पानी भरती नजर आती हैं। यह सब अकादमी की खोज का परिणाम है।

इसके पीछे भारतीय दलित साहित्य अकादमी का गत 41 सालों का परिश्रम, लगन, निष्ठा है जो अकादमी ने सदियों से मूक, अछूत, दलित, शोषित लोगों को मंच दिया, जुबान दी, विचार दिए, दिशा दी, कलम दी, लेखन के लिए प्रेरित किया, मान–सम्मान दिया और देश–विदेश में प्रख्यात किया। यह अकादमी का साकार परिणाम है।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी ने ही 5 हजार साल पुरानी सिंधु घाटी की सभ्यता की खोज कर वहां स्थित भव्य, आलीशान सर्वोत्तम भवन कला के नमूने मोहन जोदड़ो, हड़प्पा, लोथल, धोलवीरा, पीली बंगा, काली बंगा शहरों की संस्कृति को उजागर किया। दलित साहित्य, दलित कला, दलित संस्कृति, दलित वीर–वीरांगना, दलित संत, महात्मा, महापुरुष का जो मान–सम्मान आज आर्य संस्कृति के लोग कर रहे हैं, वे भी यह मानने लगे हैं कि दलित (द्रविड़) ही इस देश के मूल निवासी थे जिन्हें धोखे और षड्‌यंत्रपूर्वक सिन्धु घाटी से दक्षिण भारत की ओर धकेल दिया गया। आर्यों के इस छल, कपट को दलित साहित्य ने ही उजागर कर द्रविड़ व उनकी भाषा तमिल, तेलगू, मलयालम व कन्नड़ को यथोचित सम्मान दिया।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी अपना चहुंओर प्रचम फैलाते हुए अपना 41वें राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन देश की राजधानी दिल्ली में 12-13 दिसम्बर, 2025 को आयोजित कर रहा है। आप इसमें ससम्मान आइये, देश–विदेश से पधारे दलित प्रतिनिधियों से मेल–मुलाकात कीजिए और फिर अकादमी से जुड़कर भगवान बुद्ध, गुरु रविदास और बाबा साहब डा. अम्बेडकर के कारवां को और आगे बढ़ाने में हमारा सहयोग कीजिए। गुरु रविदास जी ने सबसे पहले पराधीनता के खिलाफ आह्‌वान करते हुए कहा था–

पराधीन का दीन क्या,
पराधीन बेदीन।
रविदास दास पराधीन का
करे ना कोई यकीन।।

उन्होंने सामाजिक समता का सन्देश देते हुए कहा था–

ऐसा चाहूं राज मैं,
जहां मिले सबन को अन्न।
छोट बड़े सब सम बसै,
रविदास रहे प्रसन्न।

उन्होंने कहा था–

मन चंगा तो खटोटी में गंगा।

इसी कामना के साथ बाबा साहब डा. अम्बेडकर के मूल मंत्र–'शिक्षित बनो, संगठित हो, संघर्ष करो' के उद्‌घोष के साथ जय भारत जय भीम।•

हिमायती
हिन्दी पाक्षिक पत्र
पढ़ें और आगे बढ़ें।

अलकनन्दा लेंड कन्जर्वेशन फोरेस्ट डिवीजन, गोपश्वर, चमोली
(उत्तराखंड)

श्री गुरू रविदास नेशनल अवार्ड–2025

श्री गंगा दास बसिया
लेखक व धर्म प्रचारक
चंडीगढ़ (पंजाब)

बाबू परमानन्द मेमोरियल अवार्ड–2025

श्री रामलाल भगत
पूर्व ज्वाईन्ट डायरेक्टर आफ एग्रीकल्चर
डिपार्टमेंट आफ एग्री. प्रोडेक्सन एंड फार्मर
वेलफेयर, जम्मू (जम्मू–कश्मीर राज्य)

सद्गुरू कबीर नेशनल अवार्ड–2025

श्री गिरधारी लाल, एडवोकेट
सोशिल वर्कर
बोलिना, जालन्धर (पंजाब)

महर्षि वाल्मीकि नेशनल अवार्ड–2025

प्रोफेसर रेवन्ना नायक
प्रिंसिपल–जे.एम.जे.डी. ईडी वुमेन कालेज, चिपागी, सिरसी, उत्तर कन्नड़ (कर्नाटक)

बाबू जगजीवन राम समता नेशनल अवार्ड–2025

श्री शेखर सेवा
चेयरमेन – शेड्यूल्ड कास्ट वेलफेयर बोर्ड, गवर्नमेंट आफ सिक्किम
गंगटोक (सिक्किम)

राज्यों में अकादमी की शाखाओं ने दलितों को एकजुट करके एक सशक्त कड़ी बनाई है जिससे दलित अपने अधिकारों के प्रति सजग तो हुए ही हैं और उन्हें प्राप्त करने के लिए भी संघर्षरत हैं।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी ने गत 41 वर्षों में दलित साहित्य के माध्यम से देश में एक नई वैचारिक क्रान्ति पैदा की है। दलित एक दूसरे को जानने लगे हैं और अकादमी के मंच पर आकर एक–दूसरे की समस्या को पहचानने भी लगे हैं और उन समस्याओं के निवारण के लिए विचार–विमर्श करके उनका हल ढूंढ़ने लगे हैं। अकादमी ने 'दलित साहित्य' को जन्म दिया, कॉलेज–विश्वविद्यालयों में स्थापित किया, दलित लेखकों को प्रोत्साहित किया और दलित साहित्यकार के रूप में उन्हें सम्मानित करके समाज में यथोचित सम्मान देकर उनका मार्गदर्शन किया।

आज विश्वविद्यालय व कॉलेज के पुस्तकालय दलित साहित्य से भरे पड़े हैं, दलित साहित्य पाठ्यक्रम शिक्षण संस्थाओं में पढ़ाया जा रहा है, उस पर शोध करवाकर पीएच.डी., डी.लिट्, एम.फिल की उपाधियों से शोधार्थियों को सम्मानित किया जा रहा है। प्रकाशक दलित साहित्य प्रकाशन के लिए दलित लेखक व साहित्यकारों को यथोचित मानदेय देकर दलित साहित्य लिखवा रहे

दलित शब्द, दलित साहित्य और दलित साहित्यकार

• डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर

'दलित' शब्द मूल नहीं है, यह अपनी परिभाषा स्वयं उद्भाषित करता है। दलित वह है जिसका दलन किया गया हो, शोषण किया गया हो, उत्पीड़न किया हो। उपेक्षित, अपमानित, प्रताड़ित, बाधित और पीड़ित व्यक्ति भी 'दलित' की श्रेणी में आते हैं। इस तरह 'दलित' शब्द की परिभाषा के अन्तर्गत जहां सदियों से सामाजिक वर्णव्यवस्था और जातिवाद से अभिशप्त दलित, शोषित, उपेक्षित व उत्पीड़ित बन्धनों में बाधित नारी एवं बच्चे भी इस श्रेणी में शामिल हैं। भूमिहीन, अछूत, बंधुआ, दास, गुलाम, दीन और निराश्रित भी 'दलित' ही हैं।

'दलित' शब्द जहां व्यक्ति को अपनी अस्मिता, स्वाभिमान और अपने गौरवमयी इतिहास पर दृष्टिपात करने को बाध्य करता है, वहीं पर अवगति, वर्तमान स्थिति और तिरस्कृत जीवन के विषय में सोचने के लिए विवश करता है। हम कौन थे? क्या थे? क्या हो गये? आदि ऐसे प्रश्न हैं जिन्हें 'दलित' शब्द उत्तर पाने के लिए प्रेरित करता है। इस तरह का 'दलित' शब्द का सम्बन्ध जहां सरस्वती और सिन्धु घाटी की सभ्यता, वहां के निवासी से जुड़ा है, जिन्होंने भारत की धन–सम्पदा के आकर्षण में इस सभ्यता के सृजनकर्ताओं को उजाड़ा, पराजित किया, उनकी संस्कृति, धर्म, साहित्य पर कब्जा किया, अपनाया और उन पर सामाजिक बन्धन थोपकर उन्हें गुलाम बना दिया। शिक्षा ग्रहण करने, धन अर्जित करने और दूसरों से समानता करने के अधिकार पर सदैव के लिए प्रतिबन्ध लगा दिया। इसीलिए 'दलित' शब्द व्यक्ति को अपने गौरवमयी अतीत की तरफ झांकने के लिए प्रेरित करता है।

'दलित' शब्द सामाजिक असमानता की ओर भी इंगित करता है। एक जैसे डील–डोल वाले, एक जैसे रक्त वाले लोगों में परस्पर ऊंच–नीच, छोटे–बड़े की भावना क्यों है? एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से छुआछूत क्यों करता है? मन्दिर में कुत्ता प्रवेश कर सकता है, पर एक अछूत 'इंसान' मन्दिर में भगवान के दर्शन नहीं कर सकता, क्या कारण है? हम विदेशी, विधर्मी के साथ बैठकर खा सकते हैं, रोटी–बेटी का रिश्ता कर सकते हैं, पर एक 'दलित' स्वधर्मी को पास बैठाने से हिचकिचाते हैं, आखिर क्यों?

'दलित' शब्द इतिहास के उस पहलू पर भी प्रकाश डालता है जिसके कारण हमारा देश भारत सैकड़ों वर्षों तक विदेशियों का गुलाम रहा? समाज के कुछ स्वार्थी लोगों ने अपने आत्माभिमान और 'अहं' के कारण समाज की असली रीढ़–श्रमजीवी और शिल्पकार वर्ग को राष्ट्र की मुख्य धारा से काटकर रख दिया। जिस कारण से क्षत्रियों की शूरवीरता कमजोर पड़ गयी और वे विदेशियों के सामने परास्त होते चले गये। अगर दलितों का सही मूल्यांकन किया होता, उनकी वास्तविक शक्ति का सदुपयोग होता तो भारत कभी विदेशियों का गुलाम नहीं बनता, पर दुःख इस बात का है कि यहां के तथाकथित उच्च वर्ग ने विदेशियों की दासता सहज ही कुबूल कर ली, पर 'दास' बनाये अपने भाइयों को गले लगाना अपनी इज्जत के खिलाफ समझा।

'दलित' शब्द आज 'प्रेरणा' और 'विद्रोह' का पर्यायवाची भी है। दलितों को जहां वह उनके गौरवमयी अतीत को दर्शाता है, वहीं वह उन्हें सामाजिक आजादी, समानता और सम्मान के लिए प्रेरित करता है। वह उन शक्तियों के विरुद्ध खुला विद्रोह करने की भी प्रेरणा देता है जिन्होंने झूठे सामाजिक नियमों में बांधकर न केवल उनकी 'विवेक शक्ति' को ही नकारा बना दिया बल्कि उनकी सोच को भी सदैव के लिए गुलाम बनाकर रखा।

इस तरह आज 'दलित' शब्द उन

बेजुबानों की आवाज है जिनकी जुबान 'वेद मन्त्र' दोहराने पर काट दी गयी, उन लोगों की श्रवण शक्ति है, जिनके कानों में 'वेद मन्त्र' सुनने पर उबलता हुआ शीशा उडेल दिया गया, उन लोगों के हाथ हैं जिन्हें समानता के अधिकार मांगने के अपराध में काट दिया गया और उन लोगों के पांव हैं जिन्हें न्याय की याचना करने के लिए बढ़ने पर कलम कर दिया गया।

'दलित' शब्द आक्रोश, चीख, वेदना, पीड़ा, चुभन, घुटन, छटपटाहट का प्रतीक है। यह उन लोगों की ओर संकेत करता है जो अमानुषिक सामाजिक व्यवस्थाओं में बंधे, अन्याय, चुभन, घुटन और छटपटाहट को अनदेखा कर मनुस्मृति की जालिम न्याय प्रणाली की दुहाई देकर उल्टे उनके रिसते घावों पर नमक–मिर्च छिड़का गया। वे और छटपटाएं, पर धीरे–धीरे भाग्य, भगवान और विधि का विधान मान वे कुण्ठित होकर बैठ गये। यह उन लोगों का प्रतिनिधि है जो सदियों से बंधुआ बने नरकीय जीवन जीते रहे, खून के आंसू पीकर बेबसी में बेगार करते रहे, मां–बेटियों की अस्मिता से खिलवाड़ करते देखकर भी आक्रोश को रोके रहे। हर क्षण कदम–कदम पर अत्याचार, अपमान, सहते हुए सब्र का घूंट पीते रहे।

इस तरह 'दलित' शब्द एक इतिहास है, सामाजिक दर्पण है, सर्वहाराओं का चमत्कार है, अस्मत, अस्मिता, असमानता और अनाचार विवेचक है। यह शोषकों, दुराचारियों, अन्यायियों के कुकर्मों को पर्दाफाश करके जहां दलितों, पीड़ितों, दासों और पराधीनों को इनसे स्वतन्त्र होने का आह्वान करता है, वहीं उन्हें समता और सम्मान के साथ सुखी और समृद्ध जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है। इस तरह 'दलित' शब्द सच्चा पथप्रदर्शक ही नहीं, अपितु सच्चा नेता है जो अवनति से प्रगति की ओर ले जाता है और निर्जीवों में संजीवनी फूंकता है।

'दलित' शब्द जब साहित्य के साथ मिल जाता है तो साहित्य को विशिष्टता प्रदान करता है, विशेष अर्थ गौरव से सुशोभित करता है। ऐसे साहित्य को एक पृथक् धारा प्रदान करता है, एक नयी पहचान से परिचित कराता है। 'साहित्य' के साथ 'दलित' शब्द मिलकर वह 15 प्रतिशत लोगों का प्रतिनिधि नहीं रहता, अपितु धरती से जुड़े 85 प्रतिशत लोगों का प्रतिनिधि साहित्य कहलाता है।

दलित साहित्य

दलित साहित्य दलितोत्थान साहित्य यानि वह साहित्य जो दलितों, पीड़ितों, शोषितों, उपेक्षितों और असहाय वर्ग के उत्थान और नव विकास के लिए प्रेरित करता है, जो एसे व्यक्तियों को उनके गौरवमयी इतिहास से परिचित कराते हुए उनको उनके मानवीयता की पहचान से अवगत कराता है। यह वह साहित्य है जो धरती से जुड़े लोगों को उनकी समस्या और दुर्दशा से अवगत कराते हुए उनको निराकरण और समाधान के उपाय बताता है।

दलित साहित्य एक ऐसा साहित्य है जो सभी तरह की वर्ण–व्यवस्था, जाति–पांत, ऊंच–नीच, भेदभाव के दायरे से ऊपर है और जिसे धर्म, भाषा और प्रदेश की सीमाओं में नहीं बांधा जा सकता। यह समाज के सर्वहारा वर्ग के समान निश्छल और सरल है। इसे अपने उद्देश्य पूर्ति के लिए किसी छन्द, अलंकार आदि की आवश्यकता नहीं। दलन की वेदना, शोषण की कुढ़न, अन्याय का उत्पीड़न और अत्याचार का रुदन, अपमान की पीड़ा अभिव्यक्ति, भाषा और अलंकार नहीं देखती।

दलित साहित्य पुनर्जन्म, भाग्य, भगवान, धर्म, कर्म के सिद्धान्त को नकारता है और व्यक्ति को साधना, आस्था और चिन्तन के प्रति उन्मुख करता है। यह वह साहित्य है जो एक स्वस्थ, उचित, लक्ष्य की ओर मानव समाज में समृद्धि भाव उत्पन्न करता है। यह इंसान को इंसान से तोड़ता नहीं, जोड़ता है। वह इंसान में इंसान के प्रति भेदभाव, तिरस्कार, अलगाव, घृणा पैदा नहीं करता अपितु उनमें मानव प्रेम, सहिष्णुता, भ्रातृ–भाव पैदा करता है। मानव जीवन में समरसता और समन्वय लाता है।

दलित साहित्य इंसानियत, भेदभाव, छुआछूत, घृणा, नारी शोषण, बंधुआ जीवन, धार्मिक कठमुल्लापन, कर्मकाण्ड, रुढ़िवाद और ब्राह्मणवाद के खिलाफ खुला विद्रोह हैं जो इन्सानियत प्रेमी है, उनकी यह प्रशंसा करता है, जो दलितोत्थान में जुड़े हैं, उनको फूल चढ़ाता है, जो मानव अधिकारों के लिए जूझ रहे हैं, उनका सम्मान करता है और जो दासता और शोषण से मुक्ति दिलाते हैं, उनकी आराधना करता है। दलित साहित्य 'स्व–अनुभूति' का साहित्य है, भोगे हुए जीवन की दास्तां का साहित्य है। ऐसी स्थिति में दलित, अछूत, मूल निवासी द्रविड़, अनार्य, शूद्र जाति में जन्मे हर व्यक्ति के दलित जीवन की कहानी 'दलित साहित्य' का दस्तावेज है।

विदेशी आर्य तो अकेले ही ईरान से भारत में धन–धरती के लालच में आये थे। उन्होंने रात में धोखे से शान्तिप्रिय, कुशल शिल्पकार विशाल नगरों के सृजनकार यहां के मूल निवासियों पर आक्रमण कर उनके नगर, धन–सम्पदा पर तो कब्जा किया ही, यहां के मूल निवासियों की महिलाओं को भी बन्धक बनाकर अपनी 'रखैल' बना लिया और उन पर भी घर से बाहर निकलने और शिक्षा ग्रहण करने पर प्रतिबन्ध लगा दिया। इस तरह देश की सम्पूर्ण सवर्ण महिलाएं भी दलित समाज की धरोहर हैं और उनके बन्दी जीवन की दासता की व्यथा–कथा भी 'दलित साहित्य' का अभिन्न अंग है।

विदेशी आक्रमणकारी आर्यों ने न कोई नगर, शहर बसाये और न ही कोई गांव बसाये। वे तो जंगलों में आश्रम बनाकर रहने के अभ्यस्त थे। देश में जो साढ़े छः लाख गांव हैं, उनको बसाने, उनकी रचना करने और उनका नामकरण करने का श्रेय भी यहां के मूल निवासी अनार्यों को जाता है। इन गांवों में अलग–अलग बोली, भाषा, खान–पान, रहन–सहन, पहनावा, पूजा–पाठ, आस्था, तन्त्र–मन्त्र–टोटके की संस्कृति मूल निवासियों की संस्कृति है जो यहां के लोकगीत, लोकोक्ति, मुहावरे, रीति–रिवाज में आज भी जीवित है। अतः देश के ये साढ़े छह लाख गांवों की कहानी की दास्तां भी दलित साहित्य की धरोहर है। •

भारतीय दलित साहित्य अकादमी

मुख्यालय : बी-3/9, दूसरी मंजिल, मॉडल टाउन-1,
दिल्ली-110009 (भारत)

41वां राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन

निमन्त्रण पत्र

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के तत्वावधान में द्विदिवसीय 41वां राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन **पंचशील आश्रम, झड़ौदा गांव (बुराड़ी बाई पास), निरंकारी समागम ग्राउंड के सामने, आऊटर रिंग रोड, दिल्ली–84 में 12-13 दिसम्बर, 2025** को आयोजित किया जा रहा है। इसमें देश के सभी राज्यों के, सभी भाषाओं के दलितोत्थान में जुटे दलित साहित्यकार, पत्रकार, लेखक, सम्पादक, समाजसेवी आदि भाग लेंगे जो दलितोत्थान विषयों पर विचार–विमर्श करेंगे। दलित नेताओं को भी इस सम्मेलन में आमन्त्रित किया गया है। आप दलित समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति और शुभ चिन्तक होने के नाते इस सम्मेलन में मित्रों सहित सादर आमंत्रित हैं। सभी प्रतिनिधियों के आवास की व्यवस्था अकादमी की ओर से सम्मेलन स्थल पंचशील आश्रम, झड़ौदा गांव (बुराड़ी बाई पास), दिल्ली–84 में की गई है। आप अपने सुझाव/विचार/प्रस्ताव तथा आने वाले साथियों की सूची शीघ्र भेज देंगे तो इससे व्यवस्था करने में आसानी होगी। आशा है सम्मेलन को सफल बनाने में आपका पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

डा. सोहनपाल सुमनाक्षर
राष्ट्रीय अध्यक्ष
मो. : 9810278936

जय सुमनाक्षर
राष्ट्रीय महासचिव
मो. : 9891989175

E-mail : jay.sumanakshar@gmail.com
Website : www.bdsakadami.com

41वां राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन

स्थान : पंचशील आश्रम, झड़ौदा गांव, (बुराड़ी बाई पास) रिंग रोड, दिल्ली-84

द्विदिवसीय कार्यक्रम

स्थान : पंचशील आश्रम, झड़ौदा गांव, (बुराड़ी बाई पास) रिंग रोड, दिल्ली-84

शुक्रवार, दिनांक 12 दिसम्बर, 2025

प्रातः 8 बजे	प्रतिनिधि पंजीकरण
प्रातः 10 बजे	प्रतिनिधियों का स्वागत
दोपहर 12 बजे	स्वागत भाषण, अतिथियों का स्वागत
दोपहर 1 बजे	डा. अम्बेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार एवं अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों का वितरण
दोपहर 2 बजे	मुख्य अतिथि का भाषण
दोपहर 3 बजे	मध्यान्तर जलपान
सायं 4 बजे	डा. अम्बेडकर फैलोशिप वितरण
सायं 6 बजे	सांस्कृतिक कार्यक्रम

शनिवार, दिनांक 13 दिसम्बर, 2025

प्रातः 10 बजे	प्रतिनिधियों का पारस्परिक परिचय
प्रातः 11 बजे	उद्घाटन : दलित धर्म संसद सम्मेलन दलित इतिहास सम्मेलन दलित पत्रकार सम्मेलन दलित जन समस्याएं सम्मेलन दलित महिला सम्मेलन
दोपहर 12 बजे	सम्मेलन में प्राप्त शोध पत्र/सुझाव/प्रस्तावों का विश्लेषण व निष्कर्ष
दोपहर 2 बजे	मध्यान्तर भोजन
दोपहर 3 बजे	प्रस्तुत प्रस्तावों पर सम्मेलन की राय
सायं 6 बजे	समापन समारोह

नोट : (1) दिल्ली में मौसम ठंडा है। अतः अपने साथ गर्म कपड़े व ओढ़ने के लिए कम्बल आदि साथ लेकर आएं। (2) सभी प्रतिनिधियों के आवास की व्यवस्था सामूहिक है। जो प्रतिनिधि सपरिवार पृथक रहना चाहते हैं, वे कहीं भी अपने ठहरने की व्यवस्था कर सकते हैं। (3) आपके साथ आने वाले प्रत्येक प्रतिनिधि को साधारण प्रतिनिधि शुल्क 200/- रु. जमा करना अनिवार्य है, तभी वे आवास व भोजन की सुविधा का लाभ उठा सकेंगे। (4) पंचशील आश्रम, झड़ौदा गांव (बुराड़ी) दिल्ली-84 आऊटर रिंग रोड, बुराड़ी बाईपास के पास है। जहां आप किंग्जवे कैम्प दिल्ली से डीटीसी बस रूट नं. 61 व अन्तर्राष्ट्रीय बस अड्डा, कश्मीरी गेट, दिल्ली से डीटीसी रूट नं. 192 से पहुंच सकते हैं। किंग्जवे कैंप (जी.टी.बी. नगर) व माडल टाउन तक मेट्रो रेल आती है।

संपर्क करें : मो. 9818278936, 9891989175

स्वामी, सम्पादक/ प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा वन्दना आफसेट प्रिन्टर्स, A-9 सराय पीपलथला एक्सटेंशन, दिल्ली-33 में मुद्रित तथा रजि. कार्यालय : 233 टैगोर पार्क, माडल टाउन, दिल्ली-110009 से प्रकाशित। ☐ व्यवस्थापक : जय सुमनाक्षर, फोन : 27421449, मो. 9810278936 **Email-sumanakshar@ymail.com**

नोट : हिमायती में प्रकाशित रचनाओं के लिए सम्पादक की सहमति जरूरी नहीं। हिमायती से सम्बन्धित किसी भी कानूनी कार्रवाई का क्षेत्र दिल्ली न्यायालय तक ही सीमित है।

सम्पादकीय कार्यालय : बी 3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-110009